मोरंगे

जुलाई–अगस्त 2017

इस बार

खिड़की

3 बोलते पत्थर When big-big stones

कविताएँ

5 हरा पेड़ / म्हारो काको

6 चिंटी रानी / सर्दी

7 रिमझिम रिमझिम / रंगीला

कहानियाँ

8 बंदर, खरगोश और मालिक

9 जंगल में भैंस / बंदर की दोस्ती

10 दोस्त मिल गया

11 घना जंगल

12 चिड़िया का पंख

याद की धूप–छाँव में

13 जंगल में शिकार

14 सावधानी

बात लै चीत लै

15 काचरा और मोर

16 कुँआ बेचा, पानी नहीं

17 मटरगश्ती बड़ी सस्ती

18 हीहीही–ठीठीठी

19 कुछ हमने बढ़ायी

रजनीश कुशवाह
राजकीय विद्यालय, रामपुरा

सम्पादन : विष्णु गोपाल
सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : जीवनेद्र सिंह
वितरण : जितेन्द्र अग्रवाल
आवरण पर चित्र – नीलू, उम्र–11 वर्ष, समूह–संगम
वर्ष 8 अंक 85–86

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, विभा–अमेरिका, पोर्टिकस–नीदरलेण्ड, एच.टी. पारेख व W.C.T. के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
विजेन्द्र पाल
सचिव,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन : 07462–220957
फेक्स : 07462–220460

बोलते पत्थर

जब भारी–भारी पत्थर
पर्वत से लुढ़कते आते
छाटे टुकड़ों में बंटते
छोटे बच्चों को भाते

जरा प्यार से इनमें
ढूंढों कोई आकार
हो सकता है इनमें
हो कोई पक्षी साकार

रगड़–रगड़ कर उनके
कोने हो जाते गोल
फिर ये चिकने पत्थर
बन जाते अनमोल

पत्थर को उल्टो–पल्टो
खोजो उनमें जीव
तब पत्थर का टुकड़ा
बन जायेगा सजीव

कुछ गोल, कुछ लंबे
कुछ मोटे, कुछ चपटे
दो पत्थर आपस में
नहीं एक से लगते

पत्थर के इन जीवों पर
चटकीले रंग लगाओ
रंग–बिरंगे रंगों से
इनको खूब सजाओ

इस छोटे पत्थर से
बनेगी अच्छी चोंच
इस लंबे पत्थर से
क्या बनेगा जल्दी सोच

पत्थर के जीवों से
बनता सुन्दर चिड़ियाघर
सैर करो तुम आज उसी की
जल्दी आओ करो सफर

रामधनी, उम्र–8 वर्ष, समूह–सागर

When big-big stones

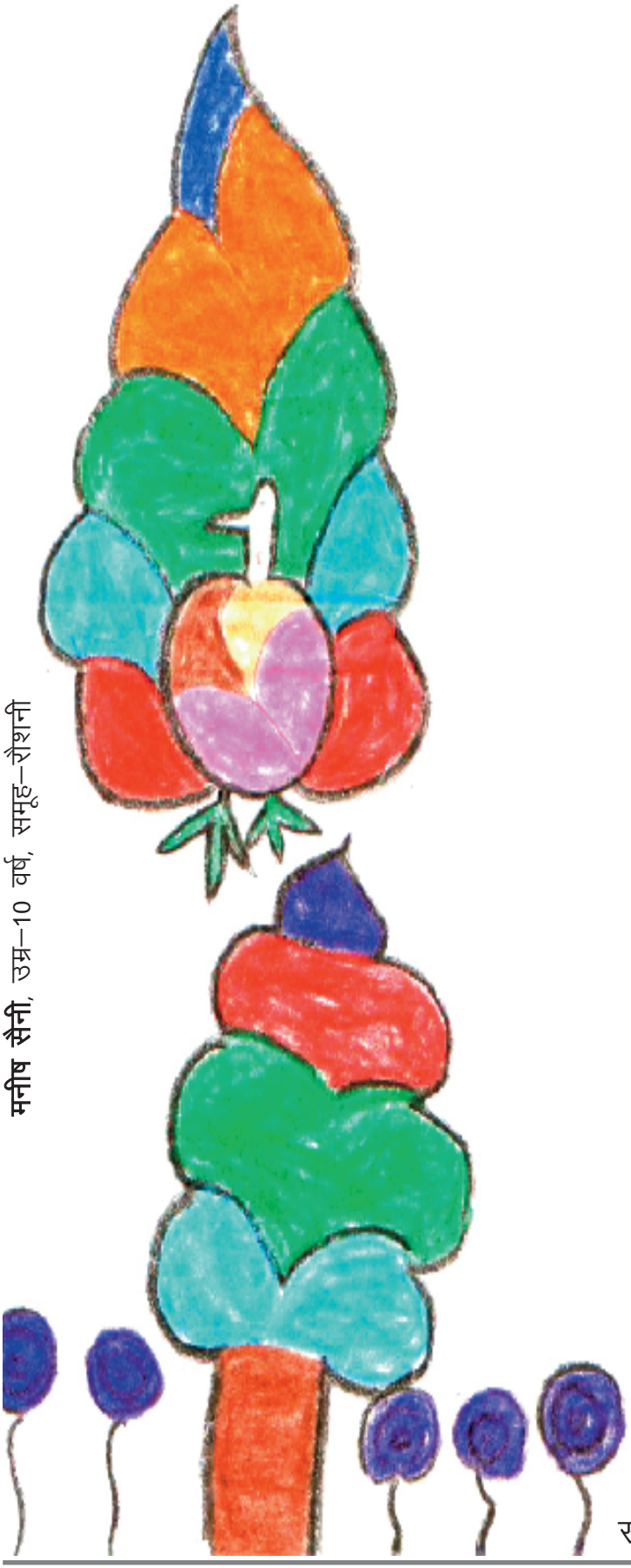

मनीष सैनी, उम्र–10 वर्ष, समूह–रोशनी

When big-big stones
Roll down the hill
They hit and split
In a tumble-mill

There corners rub
And angles grind
They feel so good
They boggle the mind

These rounded stones
Some big, some small
Two stones don't look
The same at all

This little stone
Will make a beak
This rounded one
Looks like a cheek

Look at these stones
With a little love
You'll find in them
A stony dove

Look up and down
Then turn around
Seek in the stone
A sleepy hound

Paint your pebbles
Crisp and bright
These lovely birds
Might tweet at night

Put stone on stone
To make a bird
Some day you might
Just make a herd

अबुलफज्ल हिम्माती–ए–अहूई

स्त्रोत– भारत ज्ञान विज्ञान समिति

कविताएँ

दीपक,
उम्र–12 वर्ष,
समूह–तिरंगा

हरा पेड़

हरे पेड़ पे बैठा बंदर
तोड़ तोड़ कर खाता फल
दर दर तक जाता बंदर
कभी कभी रूलाता बंदर
काले जामुन खाता बंदर
रात रात को सोता बंदर
दिन उगते ही फल खाता बंदर।

अशोक, उम्र–8 वर्ष, समूह–सागर

गोमती,
उम्र–11 वर्ष,
समूह–उजाला

म्हारो काको

आगरा सूँ काको आयो,
बाँध कमर में रोटी।
आस–पास का देखण भाग्या,
नजर है बिन की मोटी।
काड़ी–धोड़ी भी भाग आई,
जिनकी लम्बी चोटी।
काँदा सूँ रोटी खाई,
सबड़ी मोटी–मोटी।

राजेश कुमार, शिक्षक,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र रा.प्रा.वि. बोदल

चिंटी रानी

एक थी चींटी रानी
वो थी बड़ी सयानी
सिर पर थे दो एंटीना
घूम–घूम कर खबर जुटाती
छः पैरों पर दौड़ लगाती
ऊपर–नीचे, आती–जाती
ढूंढ–ढूंढकर खाना लाती
बिल में लेकर उसको जाती
सर्दी, गर्मी हो या बरसात
मेहनत करती वह दिन–रात
काम ना हो पूरा जब तक
कोशिश करती रहती तब तक
उसे देखकर हम भी सीखें
डटकर कोशिश करना सीखें
काम अधूरा न रह जाये
चींटी रानी सबक सिखाये।

जीवनेन्द्र सिंह, शिक्षक,
उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

कृष्णा,
उम्र–8 वर्ष,
समूह–रिमझिम

रितिका चावला,
शिक्षिका,
उदय पाठशाला

सर्दी का मौसम आया है
ऊनी कपड़े लाया है
दादा–दादी डरते हैं
ठण्ड से ठिठुरते है
सर्दी का मौसम आया है
गरम गरम भोजन लाया है।

रामघणी बाई,
उम्र–10 वर्ष, समूह–सागर

रिमझिम रिमझिम

रिमझिम रिमझिम बारिश आई
बारिश आई बारिश आई
रंग बिरंगी बूंदे लाई
सबने मिलकर खुशी मनाई
पौधों ने भी ली अंगड़ाई
बीजों ने भी आँखें खोली
धरती माँ भी हँसकर बोली
नदी नाले बहते आये
सब मिलकर के शोर मचाए
रिमझिम रिमझिम बारिष आई।

पूजा गुर्जर, समूह–बादल,
उदय पाठशाला कटार

रंगीला

हरा रंग है बहुत निराला
उसको देखण आया लाला
पिंक कलर है बहुत ही प्यारा
जयपुर में दिखता है न्यारा
काले रंग की काली टोपी
पहन के खड़ा है दादा गोपी
नारंगी की अजब कहानी
सुबह की किरणें बड़ी सुहानी
देख हजारा पीला न्यारा
सुबह–सुबह खिलता है सारा
नीले रंग की नील निराली
नीलकंठ में दिखती प्यारी

रजनी प्रजापत, उम्र–11 वर्ष,
राज. प्राथमिक विद्यालय, बोदल

आरती बैरवा, उम्र–10 वर्ष, समूह–सूरज

कहानी

बंदर, खरगोश और मालिक

एक जंगल था। उसमें दो दोस्त रहते थे। एक बंदर और दूसरा खरगोश। एक दिन खरगोश ने कहा, ''मैं तो गाजर खाने जाऊंगा।'' बंदर बोला, ''मैं तो फल खाऊंगा।'' वे दोनों फल खाने के लिए जा रहे थे तो उन्हें एक खेत मिला जिसमें गाजर और केले आ रहे थे। वे दोनों उस खेत में जा घुसे और फल खाने लगे। कचर–कचर की आहट से मालिक को पता चल गया कि खेत में कोई जानवर घुस गया है। मालिक दौड़कर आया तो खरगोश तो वहाँ से भाग गया और बंदर केले के पत्तों के पीछे छिप गया। माली ने सोचा कि अभी तो दो जानवरों की आवाजें आ रही थी और यहाँ तो एक भी नहीं दिखाई दे रहा है। माली को अहसास हुआ कि केले के पत्तों के पीछे कोई है। माली उसे मारने के लिए लाठी लेने चला गया और लाठी लेकर जब वापस आया तो बंदर वहाँ से भाग लिया। माली बंदर के पीछे दौड़ा परन्तु बंदर माली से भी तेजी से भाग कर निकल गया। तब माली ने कहा, ''आगे से मेरे बगीचे में मत आना, मैं शिकारियों को बुलाकर रखूंगा। फिर तुम आराम से पिंजरे में बंद रहना।'' इसके बाद वे बंदर और खरगोश दोबारा उस बगीचे में नहीं आए।

करण नायक, समूह–वीर शिवाजी, उम्र–10 वर्ष

जंगल में भैंस

एक बार एक आदमी था। उसने एक भैंस पाल रखी थी। वह दस लीटर दूध देती थी। 10 लीटर दूध बेचकर उसे रोज 500 रुपये मिलते थे। उसने इन रुपयों से एक मकान बना लिया और उसमें रहने लगा। एक दिन वह आदमी अपनी भैंस को चराने जंगल में गया। उन्हें जंगल में ही रात हो गई तो आदमी एक पेड़ पर चढ गया और भैंस नीचे ही रही। रात के समय एक शेर वहाँ आया और भैंस को खाने के लिए उसके पीछे दौड़ा। भैंस भी बहुत तेज दौड़ी, वह शेर के हाथ नहीं आई और अपने घर आ गई। शेर को भूखे ही वापस लौटना पड़ा। दूसरे दिन वह आदमी वापस अपने घर आया तो उसे वहाँ भैंस मिल गई। आदमी ने सोचा अगर मेरी भैंस को शेर खा जाता तो मेरा रोजगार ही बंद हो जाता और मैं फिर से गरीब हो जाता। उसने तय किया कि वह अब जंगल में अपनी भैंस चराने नहीं ले जायेगा।

मनखुश गुर्जर, समूह–सागर, उम्र–9 वर्ष

एक पेड़ पर एक बंदर रहता था परन्तु वह बहुत दुःखी रहता था। उस पेड़ पर फल आ रहे थे। बंदर फलों को पसंद नहीं करता था, क्योंकि उसके पास कोई दोस्त नहीं था। एक दिन बंदर ने सोचा कि वह अपना दोस्त ढूंढने जायेगा। वह दोस्त ढूंढने चला गया। चलते–चलते रास्ते में उसे एक चींटा दिखाई दिया। बंदर बोला, ''चींटे भैया, क्या तुम मेरे दोस्त बनोगे?'' चींटे ने कहा, ''मैं तुम्हारी तरह उछल नहीं सकता और मैं तुम्हारी तरह बड़ा भी नहीं हूँ, मैं तुम्हारा दोस्त नहीं बनूंगा।'' बंदर आगे चला गया। उसे आगे एक मोर मिला। बंदर मोर से बोला, ''मोर भैया, क्या तुम मेरे दोस्त बनोगे?'' मोर ने कहा, ''तुम मेरी तरह उड़ नहीं सकते, इसलिए मैं

भूमिका, उम्र–9 वर्ष, समूह–खेजड़ी

तुम्हारा दोस्त नहीं बनूंगा।'' बंदर फिर आगे गया तो उसे एक दूसरा बंदर मिला। उससे बंदर ने कहा, ''बंदर भैया, क्या तुम मेरे दोस्त बनोगे?'' दूसरे बंदर ने कहा, ''मैं भी दोस्त ढूंढने ही निकला था।'' फिर वे दोनों दोस्त बन गये। वे एक झरने के पास पानी पीने जाते हैं तो एक बंदर पानी पीने चला जाता है और दूसरा बंदर पेड़ों से फल खाने लग जाता है। फल खाते–खाते वह बंदर दूर निकल जाता है। पहला बंदर जब पानी पीकर वापस आता है तो उसे वह बंदर नहीं मिलता है। वह उसे बहुत ढूंढने पर भी नहीं मिलता। वह थक कर एक पेड़ के नीचे बैठ जाता है। दूसरा बंदर पेड़ के ऊपर से फल फेंकता है जिसकी नीचे बैठे हुए बंदर के सिर पर चोट लग जाती है। चोट लगने से वह बेहोश हो जाता है। दूसरा बंदर पेड़ से उतर कर पानी लाकर उस बंदर को पिलाता है तो पहले वाले बंदर को होश आता है। पहला बंदर दूसरे से पूंछता है, ''तुम कहाँ चले गये थे और तुमने मुझे क्यों मारा?'' दूसरा बंदर बोला, ''मैं तो मजाक कर रहा था। चलो अब वापस चलते हैं।'' फिर वे दोनों उछल–कूद करते हुए अपने फलों वाले पेड़ पर वापस चले गये।

धर्मसिंह मीना, समूह–खुशबू, उम्र–10 वर्ष

दोस्त मिल गया

शिमला सैनी, उम्र–11 वर्ष, समूह–रिमझिम

एक बार की बात है। एक जंगल था। उस जंगल में बहुत सारे जानवर रहते थे। उनमें से एक खरगोश था। जिसे एक दिन दोस्त बनाने की सूझी। खरगोश ने सोचा, ''सब के दोस्त हैं, पर मेरा कोई मित्र नहीं है।' खरगोश अपने लिए दोस्त ढूंढने चल देता है। उसे भालू का ख्याल आया और वह सोचने लगा। 'मैं एक भालू से ही दोस्ती कर लेता हूँ। पर वह तो इतना बड़ा और मैं इतना छोटा, जोड़ी नहीं जमेगी, मैं तो बराबर का दोस्त ढूंढूगा और उससे ही दोस्ती करूंगा।''

एक दिन उसको अपना दोस्त मिल ही गया। वह था सियार। खरगोश ने सोचा,'इससे ही दोस्ती कर लूँ। यह दगाबाजी करने में बहुत समझदार है।' फिर सोचा, 'इससे भी दोस्ती नहीं करूंगा। कहीं मेरे साथ ही दगाबाजी कर दी तो।'

वह घूमते–घूमते एक बाजार में गया। उसने एक दुकानदार को गुड़ और गाजर बेचते हुए देखा। उसने सोचा, 'मैं इस दुकानदार को ही दोस्त बना लूँ।' फिर उसने सोचा,' यह तो मुझे ही मारकर खा जायेगा, मैं इससे भी दोस्ती नहीं करूंगा।''

उसने दुकानदार से भी दोस्ती नहीं की। फिर वह घूमता–घूमता शेर की गुफा के पास जा पहुँचा। खरगोश ने सोचा, 'मैं इससे ही दोस्ती कर लेता हूँ।' फिर सोचा, 'यह तो मेरे अपने बड़े–बड़े नाखून चुभा देगा। मैं इससे भी दोस्ती नहीं करूंगा।'

वह घूमता–फिरता एक माली के खेत में जा पहुँचा उसने देखा माली गोभी तोड़ रहा है। उसने अपने मन में सोचा, 'मैं इस माली से ही दोस्ती कर लूँ।' उसने फिर सोचा, 'यह तो मरे पीछे कुत्ते लगाकर मार देगा।' फिर वह वहाँ से चला गया।

एक चिड़िया अपने घोंसले में बैठी थी। उसने सोचा, 'मैं इससे ही दोस्ती कर लूँ।' फिर उसने सोचा, 'यह तो मुझे चोंच मार–मार कर भगा देगी, मैं इससे भी दोस्ती नहीं करूंगा।''

वह घूमता–घूमता एक मास्टर के पास पहुँच गया। फिर उसने सोचा, 'मैं इससे दोस्ती कर लूँ।' फिर उसके मन में विचार आया, 'यह तो मुझे पढ़ाएगा और मेरे थप्पड़ मारेगा, मैं तो मर ही जाऊँगा।'

वह घूमता–घामता दूसरे देश में जा पहुँचा तो वहाँ उसे एक तितली मिली। तितली उसे बहुत अच्छी लगी। उसने खूब सोचा और पाया कि उसे तितली से अच्छा दोस्त नहीं मिलेगा। खरगोश ने तितली से दोस्ती कर ली।

करन नायक, उम्र–10 वर्ष, समूह–वीर शिवाजी

घना जंगल

एक बार की बात है। एक घना जंगल था। उस जंगल में बहुत सारे पशु–पक्षी रहते थे। एक बार जंगल में अकाल पड़ गया और सभी जगहों पर पानी खत्म हो गया। सारे जानवर परेशान होने लगे। पशु–पक्षी पानी की तलाश में इधर–उधर भागने लगे। एक भालू ने सभी जानवरों से कहा, ''चलो हम सब दूसरी जगह पर चलते हैं, जहाँ पानी मिल सके। नही तो अच्छी सी जगह देखकर हम लोग कुआँ खोद लेंगे।'' वे सभी जानवर दूसरी जगह चले गये पर उन्हें पानी नहीं मिला। अब

श्यामा शर्मा, उम्र–15 वर्ष, समूह–पीपल

वे पानी के लिए कुआँ खोदने लगे। कुआँ खोदते–खोदते सब परेशान हो गये। उन्हें प्यास लगने लगी पर पानी नहीं निकला। तभी पास की गुफा से निकलकर एक शेर उनके पास आया। सभी जानवरों को इस तरह परेशान देखकर शेर को दया आ गई। शेर ने जानवरों से पूछा, ''तुम सब जानवर यह क्या कर रहे हो?'' भालू ने कहा, ''महाराज हमारे जंगल में अकाल पड़ गया है और पानी नहीं है। इसलिए हम पानी के लिए कुआँ खोद रहे हैं।'' शेर ने कहा, ''तुम सब मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें पानी पिलाऊँगा। यहाँ से थोड़ी ही दूर एक नदी है जिसमें पानी है।'' सभी जानवर शेर के साथ डरते–डरते नदी के पास पहुँच गये। फिर सभी जानवरों ने खूब पानी पिया और वे वहीं शेर के साथ गुफा में रहने लग गये।

अर्चना प्रजापत, समूह–गाँधी, उदय सामुदायिक पाठशाला फरिया

चिड़िया का पंख

आरती सैनी, उम्र–10 वर्ष, समूह–रिमझिम

एक चिड़िया थी। वह बहुत सुंदर थी लेकिन वह थोड़ी सी मूर्ख थी। एक दिन वह झाड़ियों में बेर खा रही थी, तो उसका एक पंख झाड़ी के कांटों में उलझ गया। चिड़िया ने बहुत कोशिश की लेकिन वह अपने पंख को कांटो में से नहीं निकाल पाई। जब भी वह अपने पंख को कांटें से निकालने की कोशिश करती तो उसके पंख से खून निकलने लगता। वह थक गई और रोने लगी। तभी एक ग्वाला उस झाड़ी के पास से निकला। उसने चिड़िया के रोने की आवाज सुनी तो वह चिड़िया के पास आ गया। उसने देखा कि चिड़िया के पंख से खून निकल रहा है। चिड़िया ने कहा कि, ''मेरा पंख कांटों में फँस गया है। तुम इसे निकाल दो।'' ग्वाले ने कांटे से उसके पंख को निकाल दिया। चिड़िया ने कहा, ''आपने मेरी मदद की है, मैं आपकी बहुत आभारी रहूँगी।'' फिर चिड़िया वहाँ से चल दी। वह एक पेड़ पर बैठ गई। उसने पेड़ के नीचे देखा तो उसे सोने की मोहरें दिखाई दी। सोने की मोहरे देखकर वह बहुत खुश हुई। उसके दिमाग में एक तरकीब सूझी। उसने सोचा अगर मैं यह सारी मोहरे उस ग्वाले को दे दूँ तो कितना अच्छा रहेगा। वह जंगल में उस ग्वाले को ढूँढने लगी। उसे वह ग्वाला एक पेड़ के नीचे बैठा हुआ दिखाई दिया। चिड़िया ने ग्वाले से कहा, ''अगर तुम्हें पैसे वाला बनना है तो मेरे साथ आओ।'' ग्वाले के समझ में नहीं आया कि यह चिड़िया क्या कर रही है। इसके पास खजाना कहाँ से आ गया?'' चिड़िया ने फिर कहा, ''आपने मेरी जान बचाकर मेरी सहायता की है, इसलिए मैं तुम्हें तोहफा देना चाहती हूँ।'' ग्वाला चिड़िया के साथ चल दिया। चिड़िया उड़कर आगे निकल गई और ग्वाला उसके साथ जाने के बजाय अपने घर चला गया। उसने सोचा कि यह चिड़िया मुझे मूर्ख बना रही है। चिड़िया ने वहाँ जाकर देखा तो ग्वाला वहाँ नहीं आया था। फिर चिड़िया ने सोचा, ''ग्वाले ने मुझे मूर्ख समझा होगा। चलो कोई बात नहीं षायद ग्वाले को धन की जरूरत नहीं थी।''

ममता बैरवा, समूह–तिलक, उम्र–13 वर्ष

जंगल में शिकार

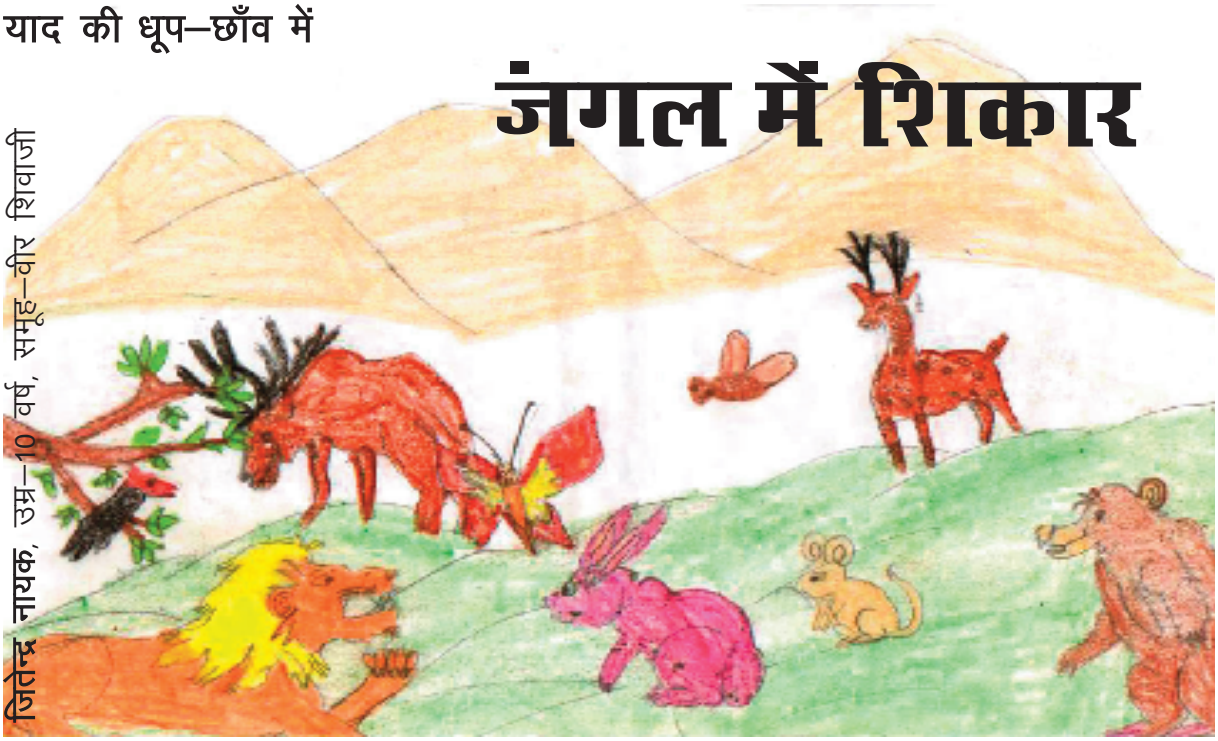

जितेन्द्र नायक, उम्र–10 वर्ष, समूह–वीर शिवाजी

एक बार मैं अपनी स्कूल के बच्चों के साथ केन्टर में बैठकर रणथम्भौर अभ्यारण्य में घूमने गया। हमारे केन्टर को जोन नम्बर 3 में जाना था। यहाँ जंगल में जाने वाले हर व्हीकल को एक जोन दिया जाता है। जिसमें ही घूमना और देखना होता है। यात्री अपनी मन–मर्जी से इधर–उधर नहीं जा सकते। हमें जोन न. 3 में वहाँ कुछ भी नही दिखा। हमें अभ्यारण्य में घूमते हुए बहुत देर हो गई। जंगल में घूमने का हमारा टाईम भी पूरा होता जा रहा था। तभी हमारे केन्टर के पास से एक केन्टर निकला। उसके ड्राइवर ने कहा,''आगे दो टाइगर है। तुम वहाँ जाकर देख लो।'' हमारे केन्टर को ड्राइवर आगे ले गया और अचानक रास्ते में केन्टर को रोक दिया। उसने कहा,''देखो आगे दो टाईगर पानी पीकर आ रहे हैं।'' हमने वहाँ पानी में से निकलते हुए दो टाइगर को देखा। उनमें से एक टाइगर हमारे केन्टर के आगे–आगे चल रहा था। मुझे टाईगर को देखकर अच्छा तो लग रहा था पर डर भी लग रहा था। टाईगर को हिरणों का एक झुण्ड दिखाई दिया। उसने पलक झपकते ही भागकर एक हिरण का शिकार कर लिया। थोड़ी देर तक हिरण तड़पड़ाता रहा, वह टाईगर से छूटने के लिए संघर्ष करता रहा। तभी अचानक हिरण टाइगर की पकड़ से छूटकर भाग निकला और बहुत दूर भाग गया। उस दिन वह टाइगर शायद भूखा रहा होगा। फिर आगे हमने तालाब में तीन मगरमच्छ देखे और वहाँ से रवाना होकर 5 बजे हम वापस स्कूल में आ गये। वहाँ से हम अपने–अपने घर लौट गये। यह घटना मैंने अपने मम्मी–पापा को भी बताई।

दीपक, समूह–झरना, उम्र–11 वर्ष

राहुल दीक्षित, उम्र–10 वर्ष, समूह–बरगद

सावधानी

एक दिन हम स्कूल से छुट्टी के बाद घर जा रहे थे। हमारा घर रांवल में है। सड़क के किनारे मैं अपनी सहेलियों के साथ बातचीत करते हुए जा रही थी। तभी एक वैन आकर हमारे पास रूकी। उसमें से एक महिला जिसने बहुत ज्यादा मेकअप कर रखा था वह हमसे बोली, ''तुम कहाँ जा रही हो?'' मैने कहा, ''हम तो हमारे घर जा रहे हैं।'' वह महिला बोली, ''हम तुम्हें वहाँ छोड़ देंगे। आ जाओ हमारे साथ बैठ जाओ।'' हम डर गये। हमें गुरुजी की बातें याद आ गई। मैंने उसमें बैठने से मना कर दिया और हम अपने रास्ते पर चल दिये। वैन भी चल दी। हम घर पहुँचे। घर जाकर मैंने सारी घटना अपने पिताजी को बताई। पिताजी ने हमारे दिनेश गुरुजी को फोन करके सारी बात बताई। अगले दिन हमारे गुरुजी ने सभा में इस घटना के बारे में बताया तथा बच्चों से इस तरह की घटनाओं से सावधान रहने की बात भी कही।

पिंकी मीना, उम्र–10 वर्ष, समूह–खुशबू

बात लै चीत लै

काचरा और मोर

विशाल कुशवाह, कक्षा–7, राजकीय विद्यालय, रामपुरा

एक बार एक काचरा और मोर थे। काचरे ने मोर से कहा आज तो दाल–बाटी बनायेंगे। दोनों ने दाल–बाटी बनाकर खा ली। काचरे ने कहा, ''मोर तेरा पेट भर गया क्या?'' मोर ने कहा,''मेरा पेट तो भर गया, क्या तेरा पेट भी भर गया है?'' काचरे ने कहा, ''मेरा पेट नहीं भरा है।'' मोर ने मजाक में कहा, ''तो तु मुझे भी खा जा, तब तेरा पेट भर जायेगा।'' काचरा मोर को सच में खा गया। परन्तु उसका पेट फिर भी नही भरा और भोजन की तलाष में काचरा आगे चल दिया। आगे उसे एक गधा मिला। काचरे ने गधे से कहा, ''गधे–गधे, रास्ते में से हट जा।'' गधा बोला, ''नहीं हटूंगा।'' काचरे ने कहा, ''नहीं हटेगा तो पत्थर की मारकर तेरा सिर फोड़ दूँगा।'' गधा नहीं हटा। काचरे ने फिर कहा, ''सुन मेरी बात, बारह बाटी खाई, दो दूकड़ा दाड़ पी, एक मोर को खा गया जब भी मेरा पेट नहीं भरा, अब मैं तुझे भी खा जाऊंगा।'' यह कहकर काचरा उस गधे को भी खा गया। परन्तु उसका पेट नहीं भरा। वह आगे गया तो उसे एक डोकरी मिली। काचरे ने डोकरी से रास्ते से हटने के लिए कहा। तो डोकरी नहीं मानी और रास्ते से नहीं हटी। काचरे ने उससे भी यही कहा कि, ''बारह बाटी खाई, दो दूकड़ा दाड़ पी, एक मोर और एक गधा को खा गया जब भी मेरा पेट नहीं भरा। अब मैं तुझे भी खा जाऊंगा।'' यह कहकर काचरा डोकरी को भी खा गया। आगे गया तो उसे एक डोकरा मिला। उसके साथ भी यही हुआ और वह उस डोकरे को भी खा गया। कचरा फिर आगे गया तो वह एक गड्डे में गिर गया। वहाँ से एक बकरी चराने वाला ग्वाल निकला। उसने काचरे को गड्डे में पड़ा देखा। कचरे ने उस आदमी से भी वहीं बात कहीं। उस आदमी ने काचरे के जोर से डण्डे की मारी तो कचरा फूट गया और उसके अन्दर से मोर, गधा, डोकरी, डोकरा जिन्दे ही निकल आये। काचरे का पेट फूटने से वह वहीं पर मर गया।

पप्पी महावर, समूह–पीपल, उम्र–14 वर्ष

कुँआ बेचा पानी नहीं

एक बार एक आदमी ने अपना कुँआ एक किसान को बेच दिया। अगले दिन जब किसान ने कुँए से पानी खींचना शुरू किया तो उस व्यक्ति ने किसान से पानी लेने के लिए मना कर दिया। वह बोला, ''मैंने तुम्हें केवल कुँआ बेचा है, ना कि कुँए का पानी।'' किसान बहुत उदास हुआ और उसने राजा के दरबार में गुहार लगाई। उसने दरबार में सबकुछ बताया और राजा से इंसाफ मांगा। राजा ने यह समस्या अपने मंत्री को हल करने को दे दी। राजा के मंत्री ने उस व्यक्ति को बुलाया जिसने कुँआ किसान को बेचा था।

मंत्री ने पूछा, ''तुम किसान को कुँए से पानी क्यों नहीं लेने देते हो, आखिर तुमने किसान को कुआँ बेचा है।'' उस व्यक्ति ने जवाब दिया, ''मंत्री जी मैंने किसान को कुँआ बेचा है ना कि कुँए का पानी। किसान का पानी पर कोई अधिकार नहीं है।'' मंत्री मुस्कुराया और बोला, ''बहुत खूब, लेकिन देखो क्योंकि तुमने कुआँ किसान को बेच दिया और तुम कहते हो कि पानी तुम्हारा है। तो तुम्हें अपना पानी किसान के कुँए में रखने का कोई अधिकार नहीं है। अब या तो अपना पानी किसान के कुँए से निकाल लो या फिर किसान को इसका किराया दो।'' वह आदमी समझ गया कि यहाँ पर अब मेरी दाल गलने वाली नहीं है और वह माफी मांग कर वहाँ से खिसक गया।

शैलेन्द्र सिंह राजावत, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला, गिरिराजपुरा

सुरेश सैनी,
उम्र–11 वर्ष,
समूह–बरगद

मटरगश्ती बड़ी सस्ती

भाषा की सहेलियाँ
बूझो यार पहेलियाँ

सफेदी, उम्र–9 वर्ष, समूह–सागर

1. छोटी सी दुकान, जिसमें लकड़ी का सामान।

2. मैं हरी मेरे बच्चे हरे।

3. मैं पीला मेरे बच्चे काले।

4. एक खाने में सौ खाने, सौ खानों में एक–एक दाना।

5. ऊपर से हरा, नीचे से पीला, गर्मियों में लगता है रसिला।

6. हमने देखा ऐसा बंदर, जो उछले पानी के अंदर।

जियालाल नायक, सोनू बैरवा, उम्र–10 वर्ष, समूह–वीर शिवाजी

हीहीही-ठीठीठी

दिनेश – (कपड़ा दुकानदार से) ''शर्ट सिलवाने के लिए अच्छा सा कपड़ा दिखाओ।''

दुकानदार – ''प्लेन में दिखाऊँ?

दिनेश – ''नहीं, अभी तो जमीन पर ही दिखाओ।''

भिखारी – ''ए भाई, 1 रूपया दे दो, तीन दिन से भूखा हूँ।''

व्यक्ति – ''तीन दिन से भूखे हो तो एक रूपये का क्या करोगे?''

भिखारी – अपना वजन तौलूंगा कि कितना घटा है।''

छोटी बैरवा, उम्र–11 वर्ष, समूह–सूरज

संता – डॉक्टर साहब मुझे एक समस्या है।

डॉक्टर – बोल क्या समस्या है?

संता – बात करते वक्त मुझे आदमी दिखाई नहीं देता है।

डॉक्टर – ऐसा कब होता है?

संता – फोन करते समय।

रामकेश जाटव, कक्षा–6, राजकीय विद्यालय सवाईगंज

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

संतरा, उम्र–11 वर्ष, समूह–संगम

एक आदमी था। वह बहुत गरीब था। उसके दो पत्नियाँ थी। उस आदमी का नाम रामू था और उसकी पत्नियों का नाम केली और मूली था। दोनों हमेशा लड़ती रहती थी। रामू दोनों पत्नियों से परेशान था। रामू दोनों को बहुत समझाता था लेकिन वे दोनों नहीं समझती थी। एक दिन शाम को रामू घर आया तो उसने देखा, घर में झगड़ा नहीं हो रहा है। उसे बड़ा अच्छा लगा कि मेरे घर में कितनी शान्ति है। वह अन्दर गया तो उसने देखा की अन्दर कोई नहीं है। ...

मीरा मीना, *समूह–सावन, उम्र–11 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

मोनिका, उम्र–10 वर्ष, जगनपुरा

नाई करता रहता डाई।
देख उसको करते बढ़ाई।
जो भी अन्दर जाता,
चिकना होकर बाहर आता। ...

रजनी प्रजापत, उम्र–10 वर्ष, *समूह–फुलवारी द्वारा शुरू की गई कविता को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

पहेलियों के ज़वाब –

1. माचिस 2. मटर 3. पपीता 4. अनार 5. आम 6. पूआ

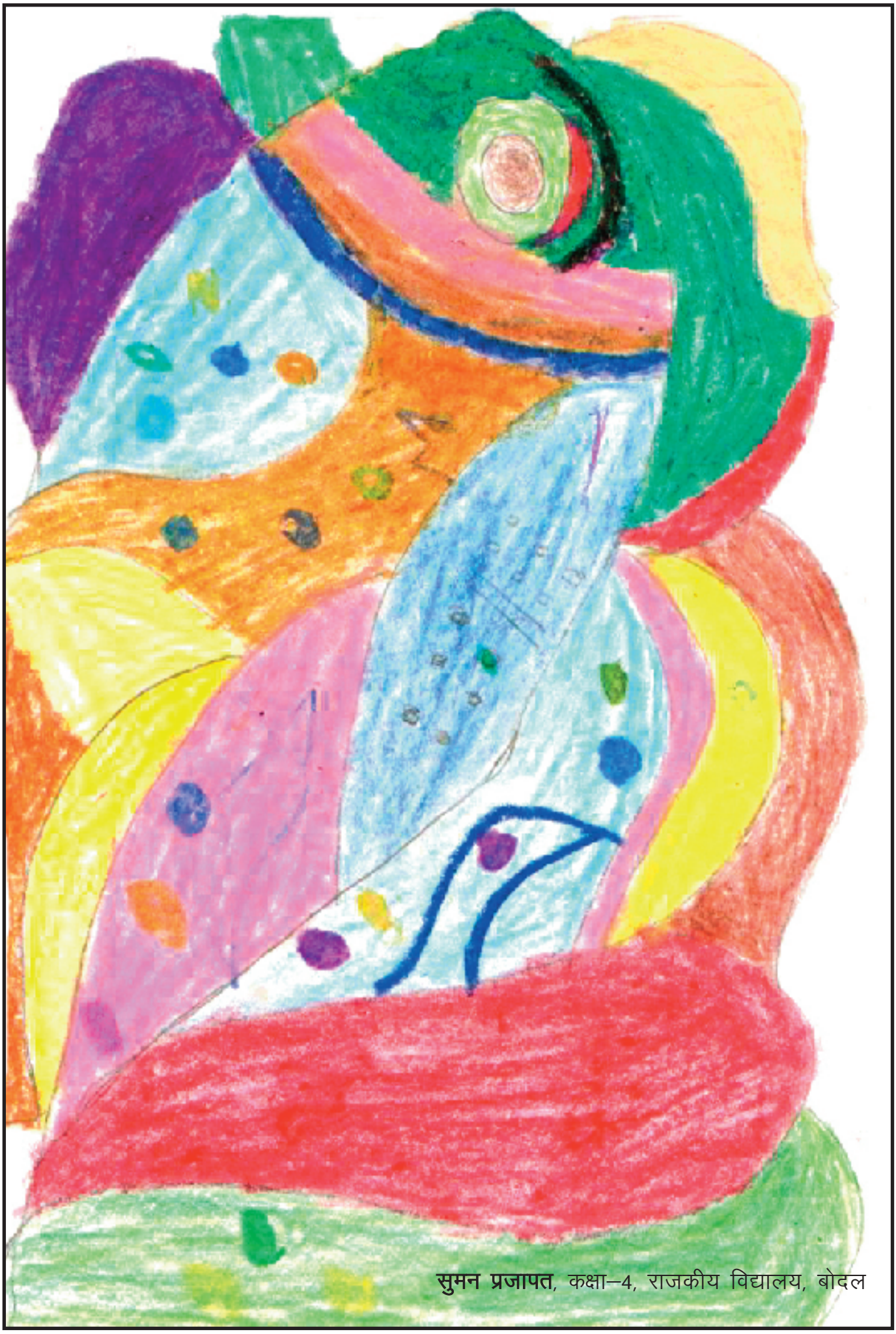

सुमन प्रजापत, कक्षा–4, राजकीय विद्यालय, बोदल